October
December 25
Aryavart Journal of Multidisciplinary Research
(NATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)
E-ISSN 3107-6009
Vol - 1
Issue - 4

डिजिटल युग में ललित कला का रूपांतरण

भक्ति अग्रवाल
सहायक प्राध्यापक (ललितकला)
श्रीकृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर (म.प्र.)

सारांश

21वीं सदी को सूचना और प्रौद्योगिकी का युग कहा जाता है। इस डिजिटल युग ने मानव जीवन के हर क्षेत्र को प्रभावित किया है, जिसमें ललित कला (Fine Arts) भी शामिल है। कला अब केवल कागज़, कैनवास या पत्थर तक सीमित नहीं रही, बल्कि स्क्रीन, पिक्सल और वर्चुअल रियलिटी तक विस्तारित हो चुकी है। डिजिटल उपकरणों और सॉफ़्टवेयरों ने कलाकारों को अभिव्यक्ति के नए आयाम दिए हैं, जैसे डिजिटल पेंटिंग, 3D मॉडलिंग, एनीमेशन, NFT आर्ट, AI आधारित जनरेटिव आर्ट आदि।

इस शोधपत्र में यह विश्लेषण किया गया है कि डिजिटल तकनीक ने ललित कला की परंपरागत अवधारणाओं जैसे सौंदर्य, मौलिकता, सृजनशीलता और अनुभव को किस प्रकार परिवर्तित किया है। यह अध्ययन दर्शाता है कि डिजिटल युग में कला अब एक इंटरएक्टिव, वैश्विक और तकनीकी संवाद का रूप ले चुकी है, जिसमें कलाकार, दर्शक और माध्यम तीनों का स्वरूप बदल गया है।

बीज शब्द

डिजिटल कला, ललित कला, तकनीकी सृजन, एआई आर्ट, NFT, वर्चुअल रियलिटी, साइबर संस्कृति, आधुनिक सौंदर्यबोध, डिजिटल पेंटिंग, 3D आर्ट।

प्रस्तावना

कला सदा से मानव सभ्यता का अभिन्न हिस्सा रही है। गुफा चित्रों से लेकर पुनर्जागरण और आधुनिकतावाद तक, कला ने समाज, विचार और तकनीक के साथ अपना रूप बदला है। परंतु 21वीं सदी में आया डिजिटल क्रांतिकाल कला के इतिहास में सबसे बड़ा परिवर्तन लेकर आया।

Aryavart Journal of Multidisciplinary Research
(NATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)
E-ISSN 3107-6009
Vol - 1
Issue - 4

कला का माध्यम अब डिजिटल डिवाइस, सॉफ्टवेयर, इंटरनेट और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) हो गया है। जहाँ पहले कलाकार के हाथ में ब्रश या छेनी होती थी, अब वहाँ स्टायलस, टैबलेट और कोड की भाषा है। कला अब केवल सृजन का माध्यम नहीं, बल्कि प्रौद्योगिकी और सौंदर्य का सम्मिलन बन गई है। डिजिटल युग ने कलाकार को नई स्वतंत्रता दी है वह अब किसी भौतिक सीमा या सामग्री से बंधा नहीं। परंतु इसके साथ ही कई नई चुनौतियाँ भी आईं – जैसे मौलिकता का प्रश्न, कृत्रिम बुद्धिमत्ता की भूमिका और डिजिटल कॉपीराइट। यह शोधपत्र इन्हीं प्रश्नों के संदर्भ में डिजिटल युग में ललित कला के रूपांतरण का गहन अध्ययन प्रस्तुत करता है।

शोध के उद्देश्य

1. डिजिटल युग में ललित कला के स्वरूप और दायरे का अध्ययन करना।
2. यह समझना कि तकनीकी विकास ने कलाकार की सृजन प्रक्रिया को कैसे बदला है।
3. पारंपरिक और डिजिटल कला की तुलना द्वारा उनके बीच के सौंदर्यात्मक अंतर को विश्लेषित करना।
4. डिजिटल कला के आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभावों का अध्ययन करना।
5. भविष्य की दिशा में डिजिटल ललित कला के संभावनाओं और चुनौतियों को रेखांकित करना।

aryavart
Journal of Multidisciplinary Research

शोध विधि

इस शोध में वर्णनात्मक, तुलनात्मक और विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है।

प्राथमिक स्रोत: डिजिटल कलाकारों के इंटरव्यू, डिजिटल आर्ट प्लेटफ़ॉर्म्स (जैसे DeviantArt, ArtStation, OpenSea) और ऑनलाइन आर्ट गैलरियाँ।

द्वितीयक स्रोत: जर्नल, शोध लेख, तकनीकी रिपोर्ट, कला इतिहास से संबंधित ग्रंथ और वेबसाइट्स।

दृष्टिकोण: गुणात्मक (Qualitative) विश्लेषण पर आधारित अध्ययन, जो सौंदर्यबोध और सांस्कृतिक परिवर्तन दोनों की पड़ताल करता है।

Aryavart Journal of Multidisciplinary Research
(NATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)
E-ISSN 3107-6009
Vol - 1
Issue - 4

शोध विस्तार

1. डिजिटल युग की पृष्ठभूमि

20वीं सदी के उत्तरार्ध में कंप्यूटर, इंटरनेट और मल्टीमीडिया तकनीक ने कला की दुनिया में प्रवेश किया। 1990 के दशक में Adobe Photoshop, CorelDRAW और 3D Studio जैसे सॉफ्टवेयर आए, जिन्होंने कलाकारों को डिजिटल कैनवास उपलब्ध कराया। 21वीं सदी में मोबाइल टैबलेट, वर्चुअल रियलिटी (VR), ऑगमेंटेड रियलिटी (AR) और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) ने कला को एक नए आयाम में प्रवेश कराया।

2. ललित कला का पारंपरिक स्वरूप

ललित कला का पारंपरिक रूप – चित्रकला, मूर्तिकला, ग्राफिक आर्ट, प्रिंटमेकिंग – हाथ के कौशल, सौंदर्यबोध और भावनात्मक अनुभूति पर आधारित था। इसमें माध्यम (कैनवास, पत्थर, लकड़ी) और प्रक्रिया दोनों ही भौतिक थे। कलाकार और कृति के बीच एक प्रत्यक्ष संवाद होता था। परंतु डिजिटल युग में यह संवाद "वर्चुअल" हो गया है। कला अब 'स्पर्शनीय' नहीं, बल्कि 'इंटरफेस-आधारित' है।

3. डिजिटल ललित कला के प्रमुख रूप

(क) डिजिटल पेंटिंग

Photoshop, Procreate, Krita जैसे टूल्स से कलाकार डिजिटल ब्रश और लेयरिंग का प्रयोग कर चित्र बनाते हैं। यह परंपरागत चित्रकला के समान ही सृजनात्मक है, लेकिन अनंत संशोधन की सुविधा इसे नया आयाम देती है।

(ख) 3D आर्ट और मॉडलिंग:

Blender, Maya और ZBrush जैसे सॉफ्टवेयरों से 3D मूर्तिकला और डिजिटल शिल्प तैयार किए जाते हैं। फिल्म, गेम और एनीमेशन उद्योग में इसका व्यापक प्रयोग होता है।

(ग) AI Generated Art:

Midjourney, DALL·E, RunwayML जैसे टूल्स कलाकारों के विचारों को एल्गोरिथ्मिक रूप देते हैं। इसने "मौलिकता" और "सृजन" की पारंपरिक परिभाषा को चुनौती दी है।

Aryavart Journal of Multidisciplinary Research
(NATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)
E-ISSN 3107-6009
Vol - 1
Issue - 4

(घ) NFT Art (Non-Fungible Tokens):

NFT तकनीक ने कला के आर्थिक मूल्यांकन को बदल दिया। अब कलाकार ब्लॉकचेन पर अपनी कला बेच सकता है, जिससे डिजिटल कला को स्वामित्व का कानूनी आधार मिला।

4. डिजिटल युग में सौंदर्यशास्त्र का परिवर्तन

पारंपरिक कला में सौंदर्य का अर्थ था – अनुपात, संतुलन, लय और अभिव्यक्ति।

डिजिटल युग में सौंदर्य का अर्थ है – इंटरैक्टिविटी, इमर्शन, और तकनीकी कौशल।

अब कला देखने का अनुभव स्थिर नहीं, बल्कि गतिशील (Dynamic) है।

उदाहरण - वर्चुअल गैलरी में दर्शक कला के भीतर प्रवेश कर सकता है।

AR कला में दर्शक का कैमरा ही कैनवास बन जाता है।

5. कलाकार की भूमिका का रूपांतरण

डिजिटल युग में कलाकार केवल सृजनकर्ता नहीं रहा, वह एक तकनीकी डिजाइनर, डेटा प्रोग्रामर और अनुभव निर्माता बन गया है।

उदाहरण - AI आर्टिस्ट "प्रॉम्प्ट" के माध्यम से मशीन से संवाद करता है।

इस संवाद में सृजनात्मकता 'सहयोगी प्रक्रिया' बन जाती है।

6. डिजिटल कला और दर्शक का नया संबंध

अब दर्शक केवल 'देखने वाला' नहीं रहा, बल्कि वह अनुभव का सहभागी बन गया है। इंटरैक्टिव इंस्टॉलेशन, ऑनलाइन प्रदर्शनियां और सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म ने दर्शक को कला का सक्रिय भागीदार बना दिया है। इससे कला का लोकतंत्रीकरण हुआ है अब कोई भी व्यक्ति कलाकार या समीक्षक बन सकता है।

7. भारतीय संदर्भ में डिजिटल कला

भारत में डिजिटल कला का विकास 2000 के बाद तेजी से हुआ। इसके साथ ही नेशनल गैलरी ऑफ मॉडर्न आर्ट (NGMA) और ललित कला अकादमी जैसी संस्थाओं ने डिजिटल प्रदर्शनी प्रारंभ की। भारत के प्रमुख डिजिटल कलाकारों में संजीव श्रीनिवासन, रूपाली पाटिल, आरती

पटेल, और सुमन घोष जैसे नाम उल्लेखनीय हैं। सोशल मीडिया और NFT प्लेटफ़ॉर्म ने भारतीय कलाकारों को वैश्विक मंच से जोड़ा है।

8. डिजिटल कला की चुनौतियाँ

1. मौलिकता का प्रश्न: एआई आधारित कला में यह स्पष्ट नहीं रहता कि सृजनकर्ता कौन है – मानव या मशीन।

2. कॉपीराइट और स्वामित्व: डिजिटल माध्यम में कला को कॉपी करना सरल है, जिससे चोरी और दुरुपयोग की समस्या बढ़ी है।

3. तकनीकी निर्भरता: कलाकार को तकनीकी उपकरणों और सॉफ्टवेयर पर अत्यधिक निर्भर रहना पड़ता है।

4. भौतिक उपस्थिति का अभाव: डिजिटल कला का अनुभव "स्पर्शनीय" नहीं होता, जिससे भावनात्मक गहराई कभी-कभी कम हो जाती है।

9. डिजिटल कला और सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव

डिजिटल युग ने कला को "साझा अनुभव" बना दिया है।
सोशल मीडिया ने इसे वैश्विक संवाद का माध्यम बना दिया।
अब कला "गैलरी" से निकलकर "मोबाइल स्क्रीन" तक पहुँच गई है।
इससे कला अधिक लोकतांत्रिक, सुलभ और संवादात्मक बन गई है।

10. भविष्य की दिशा

भविष्य की ललित कला AI, VR, Metaverse, और Mixed Reality पर आधारित होगी। कला का अनुभव अब वास्तविक और आभासी के बीच संतुलन साधेगा। कलाकारों के लिए यह समय सृजन और प्रयोग का नया युग है, जहाँ कल्पना और तकनीक का मेल अनंत संभावनाएँ खोल रहा है।

Aryavart Journal of Multidisciplinary Research
(NATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)
E-ISSN 3107-6009

निष्कर्ष

डिजिटल युग ने ललित कला को पुनर्परिभाषित किया है। यह अब केवल अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि अनुभव और सहभागिता का माध्यम बन चुकी है। जहाँ पारंपरिक कला सीमित दर्शकवर्ग तक सीमित थी, वहीं डिजिटल कला ने उसे वैश्विक बना दिया है। इस युग ने कलाकार को असीम सृजनात्मक स्वतंत्रता दी है, परंतु साथ ही नई नैतिक और तकनीकी जिम्मेदारियाँ भी दी हैं। भविष्य में ललित कला का स्वरूप 'मानव-मशीन सहयोग' पर आधारित होगा, जहाँ प्रौद्योगिकी साधन नहीं, बल्कि सृजन का सह-भागी होगी।

संदर्भ सूची

1. Paul, Christiane (2016). Digital Art. Thames & Hudson, London.
2. Manovich, Lev (2001). The Language of New Media. MIT Press.
3. Shanken, Edward A. (2015). Art and Electronic Media. Phaidon Press.
4. Grover, Satish (2019). Digital Arts and New Media Practices in India. IGNCA, New Delhi.
5. Khanna, Anish (2020). Virtual Realities and Fine Arts in the 21st Century. Indian Journal of Visual Culture.
6. Sharma, N. (2022). AI and Creativity: The Future of Digital Art. Journal of Cultural Technology Studies.
7. LKA Annual Report (2023). Lalit Kala Akademi, New Delhi.

aryavart Journal of Multidisciplinary Research